International Journal of Education and Science Research Review
IJESRR
E-ISSN 2348-6457
Volume-9, Issue-5 Sep - Oct – 2022
P-ISSN 2349-1817
www.ijesrr.org
Email- editor@ijesrr.org

जनपद बलिया के किशोरावस्था के संवेगात्मक बुद्धि वाले छात्र एवं छात्राओं की उनकी समूह गतिकी पर पड़ने वाले प्रभाव का विश्लेषण

Sanjoo Singh,
Research Scholar, Dept. of Home Science,
Maharaja Agrasen Himalayan Garhwal University

Dr. Anita Verma,
Associate Professor, Dept. of Home Science,
Maharaja Agrasen Himalayan Garhwal University

सार–

भारत में दुनिया की सबसे बड़ी किशोर आबादी है जो कि लगभग 253 मिलियन के करीब है, और यहाँ हर पांचवां व्यक्ति 10 से 19 साल की उम्र के बीच का है। यह सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक रूप से भारत के लिए बहुत फायदे की बात है, अगर यहाँ बड़ी संख्या में मौजूद किशोर–किशोरी सुरक्षित, स्वस्थ एवं शिक्षित हों, और सभी सूचना एवं जीवन कौशल में दक्ष हो कर देश के विकास में सहयोग करें। प्रस्तुत अध्ययन कार्य में आँकड़ों के संकलन हेतु सर्वेक्षण पद्धति का प्रयोग किया गया है। प्रस्तुत अध्ययन कार्य में समष्टि का आशय बलिया जनपद के सभी माध्यमिक विद्यालयों में पढ़ने वाले विद्यार्थी है। प्रस्तुत अध्यापन हेतु न्यादर्श का चयन बलिया जिले के शहरी क्षेत्र के माध्यमिक विद्यालयों में से किया है। इन विद्यालयों के 10+2 स्तर के समस्त छात्र समष्टि है तथा अध्ययन अध्ययन के लिए चयनित विद्यार्थी न्यादर्श है। आँकड़ों के विश्लेषण के लिए टी–अनुपात का प्रयोग किया गया है।

प्रस्तावना–

मनुष्य को अन्य जीवों की तुलना में अनेक मानसिक योग्यताओं से सम्पन्न माना जाता है। जिनके कारण वह एक विवेकशील प्राणी है। परन्तु सभी व्यक्तियों की दृष्टि एक समान नही होती व्यापक रूप से उनमें व्यक्तिगत विभिन्नताऐं पाई जाती है। मानव को तीन स्तरों से गुजरना पड़ता है। शैशवावस्था, बाल्यावस्था, तथा किशोरावस्था जिसके बाद वह प्रौढता को प्राप्त करता है। मानव के स्कूली प्राथमिक स्तर की शिक्षा बाल्यावस्था में शुरू होता है। बाल्यावस्था को मानव के सम्पूर्ण जीवन की आधारशिला स्वीकार की जाती है। बाल्यावस्था के दौरान ही व्यक्ति के आधारभूत दृष्टिकोणों, मूल्यों, आदर्शों का काफी सीमा तक निर्धारण हो जाता है। माध्यमिक स्तर की शिक्षा शुरू होने के साथ–साथ बालक की अवस्था मानव विकास की तृतीय अवस्था अर्थात् किशोरावस्था में प्रवेश हो जाता है, जो प्रौढ़ावस्था के प्रारम्भ होने तक चलता है। माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की अवस्था अर्थात् किशोरावस्था वह अवस्था है जिसमें बालक परिपक्व की ओर अग्रसर होता है। मनोवैज्ञानिकों के अनुसार किशोरावस्था बालकों में 13 वर्ष से 18 वर्ष एवं बालिकाओं में 12 वर्ष से 16 वर्ष के बीच मानी जाती है। बाल्यावस्था तथा प्रौढ़ावस्था के बीच का संधिकाल होने के कारण इसे जीवन का सर्वाधिक कठिन काल माना जाता है। किशोरावस्था में शरीर और मस्तिष्क में ऐसे क्रान्तिकारी परिवर्तन होते है जिसे देखकर

किशोर स्वयं आश्चर्य में पड़ जाता है।

मनोवैज्ञानिक स्कीनर ने किशोरावस्था के बारें में कहा है कि– *''किशोरावस्था एक नया जन्म है क्योंकि इसी में उत्तम और श्रेष्ठत्तर मानव विशेषताओं के दर्शन होते है।''*

किशोरावस्था के महत्त्व के विषय में हैड़ो कमेटी रिपोर्ट में कहा गया है– *''ग्यारह या बारह वर्ष की आयु में बालक की नसों में ज्वार उठना आरम्भ हो जाता है इसे किशोरावस्था के नाम से पुकारा जाता है यदि इस ज्वार का समय रहते उपयोग कर लिया जाये और इसकी शक्ति तथा धारा के साथ–साथ नई यात्रा आरम्भ कर दी जाये तो सफलता प्राप्त की जा सकती है।''*

इस अवस्था में बालक एवं बालिकाओं में अनेक शारीरिक, मानसिक, सामाजिक तथा संवेगात्मक परिवर्तन होते है। इस सभी परिवर्तनों के सही उपयोग करने के लिए शिक्षा ही सही मार्ग प्रशस्त करती है। समग्रतः देखा जाय तो शिक्षा ही मनुष्य को जीवन की कंटक भरी राहों में सुगमता का मार्ग प्रशस्त करती है। शिक्षा का मुख्य कार्य वर्तमान परिस्थितियों से समायोजन तथा मानव जीवन के वास्तविक लक्ष्य को प्राप्त करना होता है। विभिन्न परिस्थितियों में क्या करना चाहिए क्या नहीं, क्या अच्छा है क्या बुरा? इस बुद्धि विवेक उद्‌भव शिक्षा के द्वारा ही होता है।

हम सभी में अपने संवेगों से निपटने हेतु अलग–अलग ढंग की क्षमता और योग्यता पायी जाती है और उसी के अनुरूप एक समूह में दूसरों की तुलना में किसी भी व्यक्ति विशेष की संवेगात्मक बुद्धि की दृष्टि से अधिक या कम बुद्धिमान माना जाता है।

एक व्यक्ति को उतना ही संवेगात्मक रूप से बुद्धिमान माना जाता है जितना कि क्षमता और योग्यता वह निम्न रूपों में प्रदर्शित करता है–

- अपने स्वयं के संवेगों की सही जानकारी।
- दूसरों की शारीरिक भाषा, मुख, मुद्रा, बोलने के अन्दाज द्वारा संवेगों को पहचानना।
- दूसरों के संवेगों को पहचानकर अपनी विचार प्रक्रिया (जैसे–अपने संवेगों तथा भावनाओं का समस्या समाधान विश्लेषण करना, निर्णय लेना आदि) में शामिल करना।
- संवेगों की प्रकृति उसकी तीव्रता तथा परिणामों से अवगत रहना।
- संवेगों की अभिवृत्ति तथा उस पर नियन्त्रण कर सकना तथा उन्हें अपने स्वयं के तथा दूसरों के हित चिन्तन, आपसी मेल–जोल तथा भाईचारे हेतु प्रयोग में लाने की क्षमता।

होमन्स (1950) ने समूह में संचालित शक्तियों का विश्लेषणात्मक अध्ययन किया। उन्होंने बताया कि किसी भी सामाजिक समूह में तीन तत्त्व होते हैं– क्रिया, पारस्परिक प्रतिक्रिया तथा मनोभाव क्रिया का अर्थ यह है कि प्रत्येक समूह का अपना एक विशेष कार्य या उद्‌देश्य होता है जिसको प्राप्त करने हेतु सदस्यगण प्रयास करते हैं। पारस्परिक प्रतिक्रिया का तात्पर्य उन व्यवहारों से है जो समूह–लक्ष्य को प्राप्त करने हेतु सदस्यों के बीच घटित होते हैं। मनोभाव का अर्थ वे मनोवृत्तियाँ हैं, जो सदस्यों के बीच विकसित होती हैं। समूह के तीनों तत्त्वों के बीच गहरा सम्बन्ध होता है। किसी एक तत्त्व में होने वाले परिवर्तन का प्रभाव दूसरे तत्त्वों पर पड़ता है। अतः समूह एक इकाई के रूप में और एक विशेष शक्ति के रूप में कार्य करता है। इस कारण सदस्य पर

समूह का दबाव पड़ता रहता है। समूह द्वारा पुरस्कार पाने अथवा दण्ड से बचने के लिए व्यक्ति अपने समूह के सामने झुक जाता है जिसको प्रतिबद्धता कहते हैं। जो सदस्य अपने समूह के मूल्यों या प्रतिमानों का उल्लंघन करता है तथा समूह दबाव के समाने नहीं झुकता है, उसे दण्डित होना पड़ता है अथवा समूह से निकलना पड़ता है।

इसी तरह के और भी कई अध्ययन हुए है जिनसे समूह–गतिकी के सम्बन्ध में निम्नलिखित बातें स्पष्ट होती हैं–

- समूह के प्रभाव सदस्य के व्यवहार पर आवश्यक रूप से पड़ता है। समूह जितना ही अधिक समग्र होता है सदस्यों पर उसका प्रभाव उतना ही अधिक पड़ता है।
- कार्य–संतुष्टि तथा उत्पादकता में गहरा सम्बन्ध होता है। कार्य समूह पर किये गये अध्ययनों से पता चलता है कि अधिकांश परिस्थितियों में जब सदस्य अपने कार्य से संतुष्ट होत हैं तो उत्पादकता बढ़ जाती है। अतः सदस्यों की संतुष्टि को अनदेखा करना उचित नहीं है।
- समूह के प्रभाव सदस्यों पर किस रूप में पड़ेगा, यह बहुत अंशों में नेतृत्व तथा बड़े समूह के लिए प्रजातांत्रिक प्रकार अधिक उपयोगी होते है।
- समूह का प्रभाव नेता तथा दूसरे सदस्यों के बीच सम्बन्ध में भी आधारित होता है। साधारणतः एक–दूसरे के प्रति धनात्मक मनोवृत्ति होने पर समूह का प्रभाव अधिक स्थाई होता है। समूह की उत्पादकता बढ़ जाती है तथा समूह लक्ष्य को प्राप्त करना आसान हो जाता है।
- समूह की प्रभावशीलता तथा वैयक्तिक समस्या–समाधान में गहरा सम्बन्ध होता है। समूह जितना ही अधिक प्रभावशाली होता है व्यक्ति की समस्या का समाधान उतना ही सरल बन जाता है।

अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्त्व–

सामाजीकरण की प्रक्रिया में बालक में पारस्परिक प्रेम, सहयोग, त्याग, अधिकार, बलिदान, सेवा, कर्त्तव्यनिष्ठा आदि सद्गुण जन्म लेते है, किन्तु समाज में नकारात्मक विचारधारा पनप रही होती है तो बालक में घृणा, विध्वंस, क्रोध, अपराधी प्रवृत्तियाँ जन्म लेती है और बालक अपने संवेगों पर नियंत्रण खो देता है और बालक में विध्वंसात्मक प्रवृत्तियाँ जन्म लेती है। वह समाज में रहकर समाज को नुकसान पहुँचाने का यत्न करने लगता है।

बालक कुछ मूल प्रवृत्तियों के साथ जन्म लेता है और प्रत्येक मूल प्रवृत्ति किसी न किसी संवेग से सम्बद्ध होती है जैसे पलायन एक मूल प्रवृत्ति है उससे भय का संवेग जुड़ा हुआ है, संवेगों का समन्वयीकरण करना मानव जीवन के लिए अति आवश्यक है क्योंकि यदि संवेग हमारे ऊपर हाबी हो जाते है तो हम अर्थ का अनर्थ कर बैठते है। संवेगों को सम्यक् स्थित में रखना महत्त्वपूर्ण है हालांकि हम संवेगों के माध्यम से ही विभिन्न क्रियाकलापों का सम्पादन करते है, परन्तु अपने संवेगों को नियन्त्रित करना जरूरी है।

एक अन्य तथ्य पर विचार करना आवश्यक है। अपने संवेगों के साथ–साथ हमें अपने सम्पर्क में आने वाले व्यक्तियों के संवेगों को समझना भी आवश्यक है, चूँकि हम शिक्षक की भूमिका में समाज में स्थापित होने जा रहे हैं तो हमें छात्रों के साथ अन्तःक्रिया करनी होगी उनके संवेगों को समझना होगा, यदि वे विध्वंसात्मक

कार्यों में रूचि लेते है तो उन परिस्थितियों को समझना होगा जिस कारण वह ऐसा कर रहे है, न कि डॉटकर उन्हें दबाना होगा।

आधुनिक समाज बहुत बुद्धिजीवी है परन्तु उनमें संवेगों को समझने तथा अपने संवेगों को नियन्त्रित करने की क्षमता का अभाव दृष्टिगोचर हो रहा है। बुद्धि के एक प्रकार में तो वह बहुत उच्च स्तर तक पहुँच चुके है जैसे यदि कोई वैज्ञानिक अपनी तकनीकी क्षमता के बल पर पर बहुत अच्छी मारक क्षमता का हथियार बनाता है, परन्तु उसका उपयोग समाज की विध्वसांत्मक गतिविधियों में करता है इससे स्पष्ट होता है कि उसमें संज्ञानात्मक विकास बहुत उच्च स्तर तक हो गया है परन्तु संवेगात्मक बुद्धि का विकास नही हो पाया है। इस कारण वह अपने नकारात्मक संवेगों को नियंत्रित नहीं कर सका तथा अन्य लोगों के संवेगों को भी नहीं समझ सका। इस परिप्रेक्ष्य में यदि ओसामा बिन लादेन का उदाहरण लिया जाय तो अत्यन्त सटीक प्रतीत होता है। यदि उसके व्यक्ति में संवेगात्मक बुद्धि का प्रभाव होता तो वह अपनी तकनीकी क्षमता उपयोग का उपयोग सकारात्मक कार्यों में करता और एक प्रतिष्ठित साफ्टवेयर इंजीनियर के रूप में प्रसिद्ध होता तथा विश्व को अपनी सेवाओं से लाभान्वित करता। परन्तु संवेगात्मक बुद्धि के अभाव में वह एक क्रूर व्यक्ति के रूप में कुख्यात हुआ जो सम्पूर्ण विश्व का दुर्भाग्य रहा। आज के समाज में एक दूसरे के भावों की समक्ष का ह्रास होता जा रहा है। व्यक्ति अपने निजी स्वार्थों में इतना तल्लीन है कि उसे किसी की भावनाओं से कोई मतलब नहीं रहा। वह अपने निजी स्वार्थ के लिए किसी का कितना भी नुकसान कर सकता है चाहे उसे क्षणिक लाभ ही क्यों न हो।

बुद्धि से सम्बन्धित विभिन्न अध्ययनों का अध्ययन करने के पश्चात् मैंने इस पक्ष पर ध्यान केन्द्रित किया कि संवेगात्मक बुद्धि के साथ–साथ समायोजन को जानना भी नितान्त आवश्यक है। अतः इस प्रकार हम कह सकते है समायोजन में संवेगात्मक बुद्धि के महत्त्व को समझना होगा तथा यह देखना होगा कि संवेगात्मक बुद्धि का प्रभाव समायोजन पर किस प्रकार पड़ता है तथा इन दोनों के मध्य क्या सम्बन्ध है। इसके द्वारा अपने व्यक्तित्व के विकास से हम समाज में अपनी भूमिका का सही निर्वहन कर सकेगें तथा अपना जीवन सार्थक बना सकेंगे।

अध्ययन के उद्देश्य–

- किशोरावस्था के उच्च एवं मध्यम संवेगात्मक बुद्धि वाले छात्र एवं छात्राओं की उनकी समूह गतिकी पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना।
- किशोरावस्था के उच्च एवं निम्न संवेगात्मक बुद्धि वाले छात्र एवं छात्राओं की उनकी समूह गतिकी पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना।
- किशोरावस्था के मध्यम एवं निम्न संवेगात्मक बुद्धि वाले छात्र एवं छात्राओं की उनकी समूह गतिकी पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना।

अध्ययन की परिकल्पनाएँ–

प्रस्तुत अध्ययन की निम्न परिकल्पनाएँ है–

- किशोरावस्था के उच्च एवं मध्यम संवेगात्मक बुद्धि वाले छात्र एवं छात्राओं की उनकी समूह गतिकी पर

कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।

- किशोरावस्था के उच्च एवं निम्न संवेगात्मक बुद्धि वाले छात्र एवं छात्राओं की उनकी समूह गतिकी पर पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।
- किशोरावस्था के मध्यम एवं निम्न संवेगात्मक बुद्धि वाले छात्र एवं छात्राओं की उनकी समूह गतिकी पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।

अध्ययन विधि एवं प्रक्रिया–

प्रस्तुत अध्ययन कार्य में आँकड़ों के संकलन हेतु सर्वेक्षण पद्धति का प्रयोग किया गया है। प्रस्तुत अध्ययन कार्य में समष्टि का आशय बलिया जनपद के सभी माध्यमिक विद्यालयों में पढ़ने वाले विद्यार्थी है। प्रस्तुत अध्यापन हेतु न्यादर्श का चयन बलिया जिले के शहरी क्षेत्र के माध्यमिक विद्यालयों में से किया है। इन विद्यालयों के 10+2 स्तर के समस्त छात्र समष्टि है तथा अध्ययन अध्ययन के लिए चयनित विद्यार्थी न्यादर्श है। संवेगात्मक बुद्धि मापन हेतु डा0 एस0के0 गुप्ता एवं श्री मोहन कुमार द्वारा निर्मित संवेगात्मक बुद्धि मापनी एवं समूह गतिकी मापन के लिए स्वनिर्मित प्रश्नावली का प्रयोग किया गया है। आँकड़ों के विश्लेषण के लिए टी–अनुपात का प्रयोग किया गया है।

प्रदत्तों का विश्लेषण एवं विवेचन–

1. किशोरावस्था के उच्च एवं मध्यम संवेगात्मक बुद्धि वाले छात्र एवं छात्राओं की उनकी समूह गतिकी पर पड़ने वाले प्रभाव से सम्बन्धित प्रदत्तों का विश्लेषण एवं निर्वचन–

सारणी सं0 1

किशोरावस्था के उच्च एवं मध्यम संवेगात्मक बुद्धि वाले छात्र एवं छात्राओं की उनके समूह गतिकी पर पड़ने वाले प्रभाव का मध्यमान, मानक विचलन एवं टी–अनुपात

क्र0 सं0	समूह	न्यादर्श (N)	मध्यमान (M)	प्रमाणिक विचलन (S.D.)	D= (M_1~M_2)	δD	टी–अनुपात	सारणी मान
1.	उच्च संवेगात्मक बुद्धि वाले छात्र–छात्राएं	51	45.33	2.29	2.98	.455	6.55*	1.98 df=145
2.	निम्न संवेगात्मक बुद्धि वाले छात्र–छात्राएं	96	42.35	3.16				

निष्कर्ष–

International Journal of Education and Science Research Review
Volume-9, Issue-5 Sep - Oct – 2022 E-ISSN 2348-6457 P-ISSN 2349-1817
www.ijesrr.org Email- editor@ijesrr.org

$H_0 : \mu_1 - \mu_2 = 0$ 0.05 सार्थकता स्तर पर निरस्त

$H_1 : \mu_1 - \mu_2 \neq 0$ 0.05 सार्थकता स्तर पर स्वीकृत

व्याख्या–

परिगणित टी–अनुपात का मान 6.55 है। मुक्तांश 145 तथा 0.05 सार्थकता स्तर के लिए द्विपुच्छीय परीक्षण पर टी–अनुपात का सारणी मान 1.98 है। अर्थात् परिगणित टी–अनुपात सारणीमान से अधिक है, अतः कहा जा सकता है कि 0.05 सार्थकता स्तर पर शून्य परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है। परिणामतः कहा जा सकता है कि किशोरावस्था के उच्च संवेगात्मक बुद्धि वाले छात्र एवं छात्राओं एवं निम्न संवेगात्मक बुद्धि वाली छात्र एवं छात्राओं का उनके समूह गतिकी पर पड़ने वाले प्रभाव में अन्तर है। अर्थात् उच्च संवेगात्मक बुद्धि वाले किशोर छात्र एवं छात्राएँ मध्यम संवेगात्मक बुद्धि वाले किशोर छात्र एवं छात्राओं की तुलना में समूह पर अधिक प्रभाव डालते है।

2. किशोरावस्था के उच्च एवं निम्न संवेगात्मक बुद्धि वाले छात्र एवं छात्राओं की उनकी समूह गतिकी पर पड़ने वाले प्रभाव से सम्बन्धित प्रदत्तों का विश्लेषण एवं निर्वचन–

सारणी सं0 2

किशोरावस्था के उच्च एवं निम्न संवेगात्मक बुद्धि वाले छात्र एवं छात्राओं की उनके समूह गतिकी पर पड़ने वाले प्रभाव का मध्यमान, मानक विचलन एवं टी–अनुपात

क्र0 सं0	समूह	न्यादर्श (N)	मध्यमान (M)	प्रमाणिक विचलन (S.D.)	D= (M_1~M_2)	δD	टी–अनुपात	सारणी मान
1.	उच्च संवेगात्मक बुद्धि वाले छात्र–छात्राएं	51	45.33	2.29	5.59	.554	10.09*	1.98 df=102
2.	निम्न संवेगात्मक बुद्धि वाले छात्र–छात्राएं	53	39.74	3.29				

निष्कर्ष–

$H_0 : \mu_1 - \mu_2 = 0$ 0.05 सार्थकता स्तर पर निरस्त

$H_1 : \mu_1 - \mu_2 \neq 0$ 0.05 सार्थकता स्तर पर स्वीकृत

व्याख्या–

परिगणित टी–अनुपात का मान 10.09 है। मुक्तांश 102 तथा 0.05 सार्थकता स्तर के लिए द्विपुचछीय परीक्षण पर टी–अनुपात का सारणी मान 1.98 है। अर्थात् परिगणित टी–अनुपात सारणीमान से अधिक है, अतः कहा जा सकता है कि 0.05 सार्थकता स्तर पर शून्य परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है। परिणामतः कहा जा सकता है कि किशोरावस्था के उच्च संवेगात्मक बुद्धि वाले छात्र एवं छात्राओं एवं निम्न संवेगात्मक बुद्धि वाली छात्र एवं छात्राओं का उनके समूह गतिकी पर पड़ने वाले प्रभाव में अन्तर है। अर्थात् उच्च संवेगात्मक बुद्धि वाले किशोर छात्र एवं छात्राएँ निम्न संवेगात्मक बुद्धि वाले किशोर छात्र एवं छात्राओं की तुलना में समूह पर अधिक प्रभाव डालते है।

3. किशोरावस्था के मध्यम एवं निम्न संवेगात्मक बुद्धि वाले छात्र एवं छात्राओं की उनकी समूह गतिकी पर पड़ने वाले प्रभाव से सम्बन्धित प्रदत्तों का विश्लेषण एवं निर्वचन–

सारणी सं0 3

किशोरावस्था के मध्यम एवं निम्न संवेगात्मक बुद्धि वाले छात्र एवं छात्राओं की उनके समूह गतिकी पर पड़ने वाले प्रभाव का मध्यमान, मानक विचलन एवं टी–अनुपात

क्र0 सं0	समूह	न्यादर्श (N)	मध्यमान (M)	प्रमाणिक विचलन (S.D.)	D= $(M_1 \sim M_2)$	δD	टी–अनुपात	सारणी मान
1.	मध्यम संवेगात्मक बुद्धि वाले छात्र–छात्राएं	96	42.35	3.16	2.61	.555	4.70*	1.98 df=147
2.	निम्न संवेगात्मक बुद्धि वाले छात्र–छात्राएं	53	39.74	3.29				

निष्कर्ष–

$H_0 : \mu_1 - \mu_2 = 0$ 0.05 सार्थकता स्तर पर निरस्त

$H_1 : \mu_1 - \mu_2 \neq 0$ 0.05 सार्थकता स्तर पर स्वीकृत

व्याख्या–

परिगणित टी–अनुपात का मान 4.70 है। मुक्तांश 102 तथा 0.05 सार्थकता स्तर के लिए द्विपुचछीय परीक्षण पर टी–अनुपात का सारणी मान 1.98 है। अर्थात् परिगणित टी–अनुपात सारणीमान से अधिक है, अतः कहा जा सकता है कि 0.05 सार्थकता स्तर पर शून्य परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है। परिणामतः कहा जा सकता है कि किशोरावस्था के मध्यम संवेगात्मक बुद्धि वाले छात्र एवं छात्राओं एवं निम्न संवेगात्मक बुद्धि वाली छात्र एवं छात्राओं का उनके समूह गतिकी पर पड़ने वाले प्रभाव में अन्तर है। अर्थात् मध्यम संवेगात्मक बुद्धि वाले किशोर छात्र एवं छात्राएँ निम्न संवेगात्मक बुद्धि वाले किशोर छात्र एवं छात्राओं की तुलना में समूह पर अधिक प्रभाव डालते है।

निष्कर्ष–

संवेगात्मक बुद्धि के द्वारा ही तार्किक चिन्तन, अमूर्त चिन्तन, समायोजन क्षमता, समस्या समाधान आदि क्षमता का विकास करता है। शोध का मुख्य प्रयास किशोरों (माध्यमिक विद्यार्थी) की संवेगात्मक बुद्धि का उनके समूह

गतिकी पर पड़ने वाले प्रभाव के अध्ययन की ओर उन्मुख रहा। इस प्रयास में छात्र एवं छात्राओं के संवेगात्मक बुद्धि का उनके समूह गतिकी पर पड़ने वाले प्रभाव को जाँचा गया एवं उच्च, मध्यम एवं निम्न संवेगात्मक बुद्धि वाले छात्र–छात्राओं के बीच अन्तर पाया गया है। अतः इस अन्तर को कम करने के लिए निम्न शैक्षिक निहितार्थों का अपनाकर उनके समूह गतिकी पर पड़ने वाले प्रभाव का कम किया जा सकता है। व्यक्ति का व्यक्तिगत विकास तो होती ही है साथ ही सामाजिक विकास भी होता है। शिक्षक जो कि समाज का महत्त्वपूर्ण अंग होता है उसकी विशेष जिम्मेदारी बनती है कि वह किशोर विद्यार्थियों को सही दिशा दे।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

- अरूण मोझी एवं के.डा. राजेन्द्ररन, जनरल ऑफ कम्यूनिटी गाइडेन्स एण्ड रिसर्च, मार्च–2018, वैल्यूम–25, नं0 1
- पाण्डा, सुमन्त कुमार, जनरल ऑफ कम्युनिटी गाइडेन्स एण्ड रिसर्च, वैल्यूम–26, नं0 2, पृ0 122–136, जुलाई–2019
- एम.आर. डा. उमा देवी, एडूट्रेक्स, अगस्त 2019, वैल्यूम–8, नं0 12
- आर. सहाय मेरी एण्ड सैम्युवल मनोरमा, एडूट्रेक्स, अगस्त 2010, वैल्यूम–9, नं0 12
- जाधव, वन्दना वी. तथा पाटिल, अजय कुमार, एजूट्रेक्स, मार्च 2011, वैल्यूम–10, नं 7
- लाल, चमन शर्मा, डा0 ए0 के0 तथा शर्मा, डा0 एस0के0, एजूट्रेक्स, नवम्बर 2010, वैल्यूम 10, नं0 3
- रेड्डी, डा0 जी लोकनाढ़ा तथा आर0 पूर्णिमा, एजूट्रेक्स, अगस्त 2011, वैल्यूम–10, नं0 12
- सिंह, डा0 वीरमति तथा वर्मा, शैलेन्द्र, भारतीय शोध पत्रिका, वैल्यूम–30, नं0 2, जुलाई–दिसम्बर–2015
- चावला, हिमानी, पन्नू, रनदीप, भुल्लर, गुरुसेवक सिंह, जनरल ऑफ कम्यूनिटी, गाइडेन्स एण्ड रिसर्च, 2014, वैल्यूम 28, नं0 3
- बानो रेशमा एवं सिंह, वीरमति, वर्ष 18, अंक–2 अगस्त 2011, न्यूपा, नई दिल्ली,
- जायसवाल स्वाती, 2018 किशोरावस्था में छात्र एवं छात्राओं के संवेगात्मक बुद्धि का उनके समूह गतिकी पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन, आई0जे0एस0आर0एस0टी0, वाल्यूम–4, इश्यू–2।